सुशासन और विकास पुरुष के नारों के बीच नीतीश को अकेले ही नहीं खड़ा किया जा सकता. वास्तविकता की तह तक पहुंचने के लिए नीतीश कुमार को उन नेताओं या मुख्यमंत्रियों के समानांतर खड़ा करना होगा जिन्होंने अपने राज्य को विकास के रास्ते पर ले जाने का तमगा हासिल किया है. उनके साथ खड़ा करना होगा जिन पर राज्य की जनता बार-बार यकीन कर रही है. नीतीश की जीत के मायने तलाशता आज का *समय*...

अन्य मुख्यमंत्रियों के बरक्स नीतीश

नीतीश का विकास मॉडल सबसे अलग

अजय सिंह
मैनेजिंग एडिटर, गवर्नेंस नाउ पत्रिका

कुछ समय पहले एंटी-इनकंबेंसी फैक्टर यानि सरकार विरोधी लहर राजनीतिक शब्दावली का सबसे प्रचलित मुहावरा हुआ करता था. ऐसा माना जाता था कि अगर सरकार ठीकठाक काम करे, तो भी कुछ वोटर सरकार के खिलाफ वोट देते थे. यानि विपक्षी पार्टियां अगर हर सीट पर अपने साझा उम्मीदवार दें और सरकार के विरोध में पड़ने वाले ज्यादातर वोट अपनी तरफ खींच लें, तो उन्हें सत्ता पाने में कोई परेशानी नहीं होगी. लेकिन यह धारणा विगत कुछ सालों से बीते दिनों की बात हो गयी है. नीतीश कुमार के दोबारा सत्ता में वापसी की तुलना अगर 2009 के आम चुनाव और अन्य राज्यों से करें, तो उनमें से कई सरकारें लगातार एक से ज्यादा कार्यकाल पूरे करती नजर आ रही हैं. दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, ओड़िसा, छत्तीसगढ़ और गुजरात शामिल हैं. इसमें हर पार्टी, हर विचारधारा की सरकारें शामिल हैं. इससे एक बात यह पता चलती है कि लोग पहले की तरह जल्दीबाजी में नहीं हैं. सरकार अपना काम ठीक से करती दिखे, तो उसे वे एक के बजाय दो, बल्कि और भी ज्यादा मौके देने को तैयार हैं. यानि अब जनता सिर्फ नकारात्मक आलोचना और कोरे वादे पर भरोसा नहीं करती है. 2009 के लोकसभा चुनाव हों या दिल्ली, छत्तीसगढ़, गुजरात, ओड़िसा, महाराष्ट्र या फिर बिहार के चुनाव नतीजे इस बात को पुख्ता करते हैं कि जनता अब काम करने वाले को अपना मत देती है. महाराष्ट्र को छोड़कर सभी राज्यों में मुख्यमंत्री को केंद्र में रखकर चुनाव लड़ा गया और जनता ने काम करने वाले व्यक्ति को वोट दिया. महाराष्ट्र में चुनाव से ऐन पहले मुख्यमंत्री बदला गया था. लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस और राकांपा गंठबंधन दोबारा सत्ता में वापसी करने में सफल रहा. महाराष्ट्र में गंठबंधन ने किसी को मुख्यमंत्री के तौर पर प्रोजेक्ट भी नहीं किया था न ही नये मुख्यमंत्री को काम करने का अधिक समय मिला था. लेकिन वहां की मुख्य विपक्षी दल शिवसेना और भाजपा को लोगों ने विघटनकारी ताकतों के रूप में देखा. खासकर शिवसेना को. भाजपा लोगों की इस नाराजगी को कम नहीं कर सकी और वहां एंटी इनकंबेंसी फैक्टर काम नहीं कर पाया. बिहार के चुनाव नतीजे लोगों की इस भावना को पुख्ता करते हैं. इस चुनाव से राष्ट्रीय स्तर पर यह बात पुख्ता हुई है कि काम करने वाले दलों को जनता फिर से सत्ता में देखना चाहती है. वैसे भी बिहार का मतदाता राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक है.

लेकिन नीतीश कुमार की ऐतिहासिक जीत के मायने रमन सिंह, नरेंद्र मोदी, शिवराज सिंह चौहान और शीला दीक्षित से अलग है. रमन सिंह की जीत में आरएसएस का हाथ भी था. छत्तीसगढ़ में आरएसएस की वनवासी कल्याण आश्रम का आदिवासियों के बीच अच्छी पैठ है. साथ ही उनकी गरीबों से संबंधित नीतियों का भी फायदा पार्टी को मिला. जबकि नरेंद्र मोदी का विकास मॉडल बिल्कुल अलग है. उनके विकास मॉडल में सामाजिक विद्वेष का भी पुट है. गुजरात की संस्थाएं पहले से ही विकसित हैं और नरेंद्र मोदी ने उसे और भी विकसित करने का काम किया है. लेकिन नीतीश कुमार एक ऐसे प्रदेश के मुख्यमंत्री थे जहां कहा जाता था कि शासन नाम की कोई चीज नहीं है. ऐसे में उनकी ऐतिहासिक जीत को अलग संदर्भों में देखा जाना चाहिए. आजाद भारत में किसी भी गंठबंधन को ऐसी जीत नहीं मिली होगी, जिसमें विपक्ष नाम की कोई चीज ही नहीं बची हो. समाज के जितने भी वर्ग थे उन्होंने नीतीश कुमार के पक्ष में जनादेश दिया. इस जीत में सामाजिक विद्वेष का पुट नहीं था. लोगों ने लालू और पासवान के गंठबंधन को विघटनकारी ताकत मानते हुए ऐसा जनादेश दिया. लालू प्रसाद और रामविलास पासवान लोगों के सामने विकास का कोई एजेंडा पेश नहीं कर पाए. इस चुनाव से लगता है कि अब लालू प्रसाद का राजनीतिक सफर ढलान पर है. लोगों ने व्यापक जनादेश इसलिए दिया ताकि यह सरकार गवर्नेंस ढांचे को विकसित करे और बिहार एक सुशासित प्रदेश बनने की राह पर अग्रसर हो सके. इस ऐतिहासिक जीत में शहर, गांव, गरीब, अमीर सभी की भागीदारी रही है. यानि उन्हें समाज के सभी तबकों का सहयोग मिला है. नीतीश की जीत में गरीब आधारित नीतियों का भी बड़ा योगदान रहा है. कुछ वर्ष पहले प्रसिद्ध इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने नीतीश कुमार की तुलना बराक ओबामा से की थी. इस जीत से साबित होता है कि वाकई नीतीश देश के बराक ओबामा हैं. कुछ लोग नीतीश की इस जीत के बाद उनकी तुलना नरेंद्र मोदी से करने लगे हैं. राजनीति में किसी दो शख्सियत की तुलना नहीं की जा सकती है. राजनीति में मोदी का अपना एक अलग स्थान है. दोनों की विचारधारा भी एक-दूसरे से अलग है. दोनों की कार्यशैली अलग है. ऐसे में दोनों की तुलना नहीं की जा सकती है. नीतीश के विकास मॉडल के केंद्र में गरीब हैं. इसलिए उनकी जीत अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों से अलग और ऐतिहासिक है. ***लेख बातचीत पर आधारित है.***

> नीतीश की तुलना नरेंद्र मोदी से नहीं की जा सकती. राजनीति में मोदी का अपना एक अलग स्थान है. दोनों की विचारधारा भी एक-दूसरे से अलग है. दोनों की कार्यशैली अलग है. नीतीश के विकास मॉडल के केंद्र में गरीब हैं. इसलिए उनकी जीत अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों से अलग और ऐतिहासिक है.

दोबारा सत्ता में वापसी करनेवाली सरकारों से नीतीश सरकार की तुलना (लोकप्रियता के पैमाने पर)

राज्य/चुनावी वर्ष	संतुष्ट लोगों की संख्या
बिहार 2010	78
मध्यप्रदेश 2008	76
छत्तीसगढ़ 2008	72
गुजरात 2007	64
दिल्ली 2008	63
महाराष्ट्र 2009	61
त्रिपुरा 2008	57

(सभी आंकड़ें फीसदी में हैं)

अन्य मुख्यमंत्रियों की तुलना में नीतीश कुमार की लोकप्रियता

नाम/चुनावी वर्ष	संतुष्ट लोगों की संख्या
नीतीश कुमार(2010)	82
शिवराज सिंह चौहान(2008)	81
डॉ रमन सिंह (2008)	75
शीला दीक्षित (2008)	63
मानिक सरकार (2008)	55

(सभी आंकड़ें फीसदी में हैं)
स्रोतः सीएनएन आइबीएन व सीएसडीएस सर्वे

लोकप्रियता में नीतीश सबसे आगे

बिहार के लगभग दो तिहाई लोगों ने उन्हें मुख्यमंत्री के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय नेता माना. यह सिर्फ बिहार में उनकी लोकप्रियता को नहीं दर्शाता है, बल्कि वे अन्य राज्यों के लोकप्रिय मुख्यमंत्रियों गुजरात के नरेंद्र मोदी, ओड़िसा के नवीन पटनायक, मध्य प्रदेश के शिवराज सिंह चौहान और दिल्ली की शीला दीक्षित से आगे दिखते हैं.

संजय कुमार
फेलो सीएसडीएस

भाजपा-जदयू गंठबंधन की ऐतिहासिक जीत के बाद अचानक नीतीश कुमार को भावी प्रधानमंत्री के तौर पर देखा जाने लगा है. मेरा मानना है कि ऐसी चरचा चुनावों में मिली ऐतिहासिक कामयाबी के आधार पर हो रही है. किसी गंभीर सोच विचार के आधार पर यह नहीं हो रहा है. इस बात में कई किंतु-परंतु शामिल हैं? यह गंठबंधन कितनों दिनों तक चल पायेगा? क्या एनडीए 2014 में होने वाले लोकसभा चुनाव में जीत हासिल कर केंद्र सरकार बना पायेगी? क्या जदयू अधिक सीटें जीतकर भाजपा पर दबाव बना पायेगी? आखिर क्यों भाजपा नेता नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री के तौर पर स्वीकार करेंगे, जबकि उनके पास जदयू से अधिक सीटें होंगी? भविष्य के इस आकलन में कई पेंच हैं. लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि नीतीश कुमार लोकप्रिय नेता नहीं हैं. वर्तमान में वे बिहार के सबसे लोकप्रिय राजनेता हैं. पिछले सालों के दौरान किए गये सर्वे से यह बात साबित होती है कि पिछले कुछ हालिया चुनावों के दौरान उनकी लोकप्रियता का ग्राफ तेजी से बढ़ा है खासकर पिछले पांच सालों के दौरान उनकी लोकप्रियता में जबरदस्त वृद्धि हुई है. 2004 तक वे लोकप्रियता के मामले में लालू प्रसाद से काफी पीछे

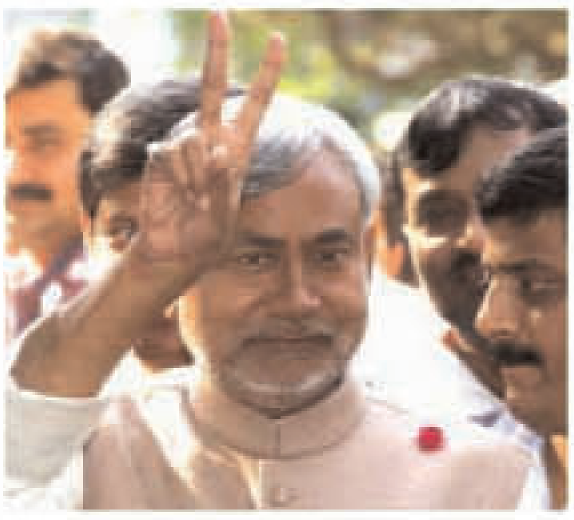

थे, लेकिन उनकी लोकप्रियता 2005 में मुख्यमंत्री बनने के बाद बढ़ गयी. बिहार के लगभग दो तिहाई लोगों ने उन्हें मुख्यमंत्री के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय नेता माना था. यह सिर्फ बिहार में उनकी लोकप्रियता को नहीं दर्शाता है, बल्कि वे अन्य राज्यों के लोकप्रिय मुख्यमंत्रियों गुजरात के नरेंद्र मोदी, ओड़िसा के नवीन पटनायक, मध्य प्रदेश के शिवराज सिंह चौहान और दिल्ली की शीला दीक्षित से आगे दिखते हैं. यह याद रखने वाली बात है कि इन सभी मुख्यमंत्रियों ने दोबारा सत्ता हासिल करने में सफलता हासिल की है. ये सभी अपनी लोकप्रियता के दम पर ही दोबारा ऐसा कारनामा करने में सफल रहे हैं. नीतीश कुमार की सफलता ने इन सभी को पीछे छोड़ दिया है और फिलहाल वे देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री बन गये हैं. नीतीश कुमार की लोकप्रियता की वजह पिछले पांच साल में किए गये उनके काम हैं. मानव विकास सूचकांक के पैमाने पर बिहार अन्य राज्यों से पीछे हो सकता है, लेकिन वह देश का ऐसा पहला राज्य बना, जहां पंचायतों में महिलाओं को पचास फीसदी आरक्षण दिया गया. इसके बाद कई राज्यों ने भी ऐसी पहल की. इस काम को श्रेय नीतीश कुमार को जाता है. स्कूल जाने वाली लड़कियों को साइकिल देने की योजना उनकी व्यक्तिगत पहल का नतीजा है. उन्होंने सामाजिक न्याय की प्रक्रिया को भी आगे ले जाने की कोशिश की. अति पिछड़े, महादलित और पसमांदा मुसलमानों के लिए विशेष योजनाओं को शुरू किया. नीतीश कुमार ने बिहार का राजनीतिक एजेंडा ही नहीं बदला, बल्कि राज्य को विकास के रास्ते पर भी ले जाने की कोशिश की. अब हमें देखना है कि वे बिहार के लोगों की इच्छाओं और सपनों को पूरा करने के लिए क्या कोशिश करते हैं. यह देखना दिलचस्प होगा कि वे कैसे अपने अधूरे कामों को पूरा करने की कोशिश करते हैं, खासकर बटाईदारी बिल का.

> नीतीश कुमार ने बिहार का राजनीतिक एजेंडा ही नहीं बदला, बल्कि राज्य को विकास के रास्ते पर भी ले जाने की कोशिश की. अब हमें देखना है कि वे बिहार के लोगों की इच्छाओं और सपनों को पूरा करने के लिए क्या कोशिश करते हैं. यह देखना दिलचस्प होगा कि वे कैसे अपने अधूरे कामों को पूरा करने की कोशिश करते हैं, खासकर बटाईदारी बिल का.

शीला दीक्षित की लगातार तीसरी पारी

शीला दीक्षित (जन्म : 31 मार्च 1938 को पंजाब के कपूरथला में) 1998 से लगातार दिल्ली की मुख्यमंत्री हैं. कांग्रेस नेता दीक्षित नवंबर 2008 में हुए विधानसभा चुनाव में जीत कर लगातार तीसरी बार मुख्यमंत्री बनीं. 2008 में हुए विधानसभा चुनावों में शीला दीक्षित के नेतृत्व में कांग्रेस ने 70 में से 43 सीटों पर जीत दर्ज की थी. वे दिल्ली की दूसरी महिला मुख्यमंत्री हैं. शीला दीक्षित1986 से 1989 तक केंद्र में मंत्री भी रही हैं. महिला उत्थान के लिए भी कार्य किया है. उन्होंने 1984 से 1989 तक संयुक्त राष्ट्र संघ की महिला स्तर समिति में भारत का प्रतिनिधित्व किया है. शीला दीक्षित का मानना है कि भारत में यदि जनतंत्र को जीवित रखना है, तो सही व्यवहार व सत्यता के मानदंडों का पालन करना जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए.

नरेंद्र मोदी की हैट्रिक

नरेंद्र दामोदर दास मोदी (जन्म : 17 सितंबर 1950 को वडनगर, जिला महेसाणा, गुजरात में) 7 अक्तूबर 2001 से गुजरात के मुख्यमंत्री हैं. 2001 में केशुभाई पटेल के इस्तीफे के बाद उन्हें गुजरात का मुख्यमंत्री बनाया गया था. उनके नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने दिसंबर 2002 और दिसंबर 2007 में हुए विधानसभा चुनावों में भारी बहुमत हासिल किया. मोदी का राजनीतिक सफर 1984 में शुरू हुआ, जब आरएसएस ने अपने कुछ सदस्यों को भाजपा में भेजा, जिनमें मोदी भी शामिल थे. 1995 में उन्होंने गुजरात में चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी संभाली. मोदी अविवाहित हैं और देश ही नहीं दुनियाभर में कट्टर हिंदू नेता के रूप में जाने जाते हैं.

मिस्टर क्लीन रमन सिंह की दूसरी पारी

पेशे से डॉक्टर रहे **रमन सिंह** (जन्म : 15 अक्तूबर 1952 को कवार्धा, छत्तीसगढ़ में) की छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रूप में यह दूसरी पारी है. भारतीय जनता पार्टी नेता डॉ रमन सिंह की मुख्यमंत्री के रूप में पहली ताजपोशी 7 दिसंबर 2003 को हुई थी. उन्होंने राज्य से नक्सलवाद को खत्म करने के लिए 2005 में 'सलवा जुडूम' की शुरुआत की. उनके इस कदम को विपक्षी पार्टी का भी समर्थन मिला. उन्होंने राज्य सरकार की स्कीमों और योजनाओं को बेहतर ढंग से लागू कर एक मिसाल कायम की है. राज्य में भ्रष्टाचार पर काफी हद तक अंकुश लगाने के कारण उन्हें मिस्टर क्लीन के नाम से भी जाना जाता है. इसी छवि ने उन्हें 2008 के विधानसभा चुनावों में जीत दिलायी और वे दोबारा मुख्यमंत्री बने.

नवीन पटनायक को दोबारा मौका

नवीन पटनायक (जन्म : 16 अक्तूबर 1946 को ओड़िसा के कटक में) 2000 से ओड़िसा के मुख्यमंत्री हैं. वे जनता दल के दिग्गज नेता एवं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक के पुत्र हैं और क्षेत्रीय पार्टी बीजू जनता दल के प्रमुख. नवीन पटनायक अविवाहित हैं. उनका युवावस्था राजनीति से दूर लेखक के रूप में बीता. 1996 में पिता की मृत्यु के बाद वे राजनीति में आये और एक साल बाद उन्होंने बीजू जनता दल का गठन किया. दल ने भाजपा के साथ गंठबंधन कर 2000 में विधानसभा चुनाव लड़ा और जीत के बाद नवीन पटनायक केंद्रीय खान मंत्री के पद से इस्तीफा देकर राज्य के मुख्यमंत्री बने. उनकी छवि गरीबों के लिए काम करने वाले ईमानदार मुख्यमंत्री की है.